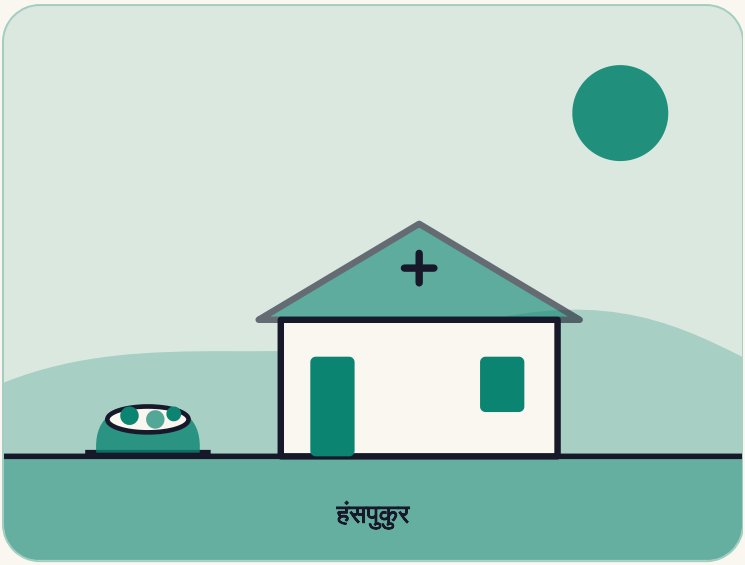

भारत

सब्ज़ी बेचने वाली, जिसने अस्पताल बनाया

इलाज के बिना पति को खोने के बाद, कोलकाता के पास एक ग़रीब विधवा ने अस्पताल बनाने की क़सम खाई। उन्होंने बनाया।

कहाँ हंसपुकुर, कोलकाता के पास

कौन सुभासिनी मिस्त्री, एक सब्ज़ी बेचने वाली, जिन्होंने ह्यूमैनिटी हॉस्पिटल बनाया

कब 1971 से 2018

4 मिनट में पढ़ें

पहला अध्याय

कहानी

सुभासिनी मिस्त्री का बचपन कोलकाता, भारत के पास एक किसान परिवार में ग़रीबी में बीता। 12 साल की उम्र में उनकी शादी हो गई। वे और उनके पति, साधन चंद्र मिस्त्री, हंसपुकुर गाँव में रहते थे। उनके चार बच्चे थे।

1971 में उनके पति को गैस्ट्रोएंटेराइटिस हो गया। यह पेट की एक बीमारी है, जिसका इलाज आसान है। उनके पास डॉक्टर के लिए पैसे नहीं थे। एक बयान के मुताबिक़ एक सरकारी अस्पताल के स्टाफ़ ने उन्हें अनदेखा किया, क्योंकि वे ग़रीब थे। उनकी मौत हो गई।

सुभासिनी के पास चार छोटे बच्चे रह गए। सबसे बड़ा आठ साल का था। वे ग़रीब थीं और पढ़ नहीं सकती थीं। उसी दिन उन्होंने एक वादा किया। वे ग़रीबों के लिए एक अस्पताल बनाएँगी, ताकि इलाज के बिना कोई और न मरे।

बीस साल की मेहनत

उन्होंने घरों में सफ़ाई की। उन्होंने मज़दूरी की। उन्होंने कोलकाता में एक पुल के नीचे अपनी छोटी दुकान से सब्ज़ियाँ बेचीं। उन्होंने एक बेटे को अनाथालय भेजा, ताकि वह स्कूल जा सके। जब भी हो पाया, वे डाकघर के खाते में थोड़े पैसे जमा करती रहीं।

> ऐसा कोई काम नहीं जो मेरे हाथों ने न किया हो।
>
> सुभासिनी मिस्त्री, Unsung में उद्धृत

सब उन पर यक़ीन नहीं करते थे। द बेटर इंडिया के मुताबिक़ लोग हँसे। जो औरत पढ़ नहीं सकती और सब्ज़ियाँ बेचती है, वह अस्पताल कैसे बनाएगी?

20	₹926	2018
बचत के साल	पहले शेड के लिए गाँव वालों ने दिए	वह साल जब उन्हें पद्म श्री मिला

एक शेड से शुरू हुआ अस्पताल

1992 में उन्होंने हंसपुकुर में ज़मीन ख़रीदी। उन्होंने गाँव वालों से मदद माँगी। लोगों ने थोड़े-थोड़े पैसे दिए, और जो उनके पास था वह भी: बाँस, ताड़ के पत्ते, मिट्टी और लकड़ी। सबसे ग़रीबों ने अपनी मेहनत दी। सबने मिलकर क्लिनिक के तौर पर एक छोटा शेड बनाया।

उनका बेटा अजय डॉक्टर बन चुका था। वह उनके साथ जुड़ गया। तारीख़ों पर रिपोर्टें अलग-अलग हैं। एक कहती है कि अस्पताल की नींव का पत्थर 1993 में रखा गया। दूसरी कहती है कि वह 1996 में खुला।

आज ह्यूमैनिटी हॉस्पिटल में रोज़ लगभग 150 ऐसे मरीज़ आते हैं जो भर्ती नहीं होते, ऐसा 2018 की एक रिपोर्ट कहती है। फ़ीस 50 रुपये है, और बहुत ग़रीबों के लिए माफ़ है। टीम सुंदरबन में भी एक और केंद्र चलाती है, जो एक दूरदराज़ इलाक़ा है।

2018 में भारत सरकार ने सुभासिनी को पद्म श्री दिया, जो देश के सबसे बड़े नागरिक सम्मानों में से एक है।

कब क्या हुआ

- **1971** उनके पति की मौत होती है। वे अस्पताल बनाने की क़सम खाती हैं।
- **1992** वे हंसपुकुर में ज़मीन ख़रीदती हैं।
- **1993** नींव का पत्थर रखा जाता है (एक रिपोर्ट)।
- **1996** अस्पताल खुलता है (दूसरी रिपोर्ट)।
- **2018** उन्हें पद्म श्री मिलता है।

दूसरा अध्याय

यह कहानी ख़ास क्यों है

बहुत से लोग सोचते हैं कि अमीर होने पर वे दूसरों की मदद करेंगे। उन्होंने लगभग कुछ भी न होने से शुरुआत की।

उन्होंने अपने बेटे को स्कूल भी भेजा, और वही डॉक्टर बनकर इस काम को आगे ले गया।

हमारी राय

उन्होंने एक भयानक नुक़सान को क़सम में बदला, और उसे निभाया।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1 नुक़सान को क़सम में बदलिए

उनके पति इलाज के बिना मर गए। उन्होंने क़सम खाई कि उनके गाँव में कोई और ऐसे नहीं मरेगा।

यह आज़माएँ: एक वाक्य लिखिए: कौन-सी समस्या आप नहीं चाहते कि कोई और झेले।

2 थोड़ा-थोड़ा, बार-बार बचाइए

जब भी हो पाया, उन्होंने डाकघर के खाते में पैसे डाले, कभी 50 रुपये, कभी 200 रुपये।

यह आज़माएँ: इस हफ़्ते किसी ज़रूरी चीज़ के लिए एक छोटी तय रक़म अलग रखिए।

3 बोझ बाँटने के लिए अपने समुदाय को बुलाइए

गाँव वालों ने पैसे, बाँस, ताड़ के पत्ते, मिट्टी और अपनी मेहनत दी।

यह आज़माएँ: किसी साझा लक्ष्य के लिए तीन लोगों से एक-एक छोटी चीज़ माँगिए।

4 ऐसे व्यक्ति में लगाइए जो काम आगे ले जा सके

उन्होंने अपने बेटे अजय की पढ़ाई का ख़र्च उठाया। वह डॉक्टर बना और उनके साथ जुड़ा।

यह आज़माएँ: इस महीने किसी छोटे को एक हुनर सिखाइए।

साथ ले जाने वाली एक बात

धीरे-धीरे निभाया गया वादा एक अस्पताल बना सकता है।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

Unsung
Subhashini Mistry

The Better India
How the Son of a Vegetable Vendor Fulfilled His Mother's Dream of Opening a Hospital (2017)

eNewsroom
From Selling Vegetables to Building a Hospital: The Padma Shri-Winning Journey of Subasini Mistry (2018)

तथ्य-जाँच नोट: तीनों स्रोत मुख्य कहानी पर सहमत हैं और ब्योरों में अलग हैं। उनके पति की मौत 34 साल की उम्र में (eNewsroom) या 35 की उम्र में (Better India) हुई; वे सब्ज़ी बेचने वाले थे (Better India, Wikipedia) या मज़दूर (Unsung), इसलिए कहानी कोई काम नहीं बताती। Unsung कहता है कि सबसे छोटा बेटा, अजय, अनाथालय गया; eNewsroom कहता है कि सबसे बड़ा; कहानी "एक बेटा" कहती है। अस्पताल की शुरुआत इस तरह बताई गई है: 1993 में नींव का पत्थर (Better India), 1993 में एक क्लिनिक जो 1995 में अस्पताल बना (Wikipedia), और 9 मार्च 1996 को उद्घाटन (eNewsroom); इसलिए कहानी 1993 और 1996 को अलग-अलग रिपोर्टों के रूप में देती है। बिस्तर 35 (eNewsroom, 2018) या 45 (Wikipedia) बताए गए हैं, इसलिए कहानी कोई संख्या नहीं देती। Unsung कहता है कि उन्होंने 1992 में 10,000 रुपये में एक एकड़ ज़मीन ख़रीदी; उसी साइट की दूसरी पंक्ति आधा एकड़ कहती है, इसलिए कहानी सिर्फ़ "ज़मीन" कहती है। Better India कहता है कि पति की मौत के एक महीने के भीतर उन्हें घर से निकाल दिया गया; बाक़ी ऐसा नहीं कहते, इसलिए कहानी इसे छोड़ देती है। उद्धरण Unsung से है। रोज़ 150 मरीज़ और 50 रुपये की फ़ीस 2018 में eNewsroom से हैं और बदल चुकी हो सकती हैं। अस्पताल के स्टाफ़ द्वारा उनके पति को अनदेखा करने का "एक बयान" Unsung का है। नक़्शे पर निशान गाँव के इलाक़े को दिखाता है, अस्पताल की सटीक जगह को नहीं। "हमारी राय" वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।